अगस्त: 2022

वर्ष : 5 अंक : 11

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

“हर नागरिक की यह मुख्य ज़िम्मेदारी है कि वह महसूस करे कि उसका देश स्वतंत्र है और देश स्वतन्त्रता की रक्षा करना उसका कर्तव्य है” – लौह पुरुष, सरदार पटेल।

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का अगस्त 2022 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। सर्वप्रथम मैं आप सभी को 76वें स्वाधीनता दिवस की बधाई देता हूँ।

मासिक न्यूज़लेटर के इस अंक में संस्थान में जुलाई 2022 में आयोजित मुख्य गतिविधियों और अनुसंधान उपलब्धियों को दिखाया गया है। संस्थान में 17 जुलाई को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का संस्थापना दिवस मनाया गया। संस्थान ने दिनांक 10 जुलाई 2022 को ‘राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस’ को मोयना फिशरीज हब, पूर्वी मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल में उभरती हुई जलीय पलायन पद्धति पर एक राष्ट्रीय अभियान के तौर पर मनाया गया। संस्थान के सभी केन्द्रों ने अपने स्तर पर मत्स्य कृषकों के साथ मिलकर मनाया ।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता के समन्वित प्रयास संस्थान ने दिनांक 29-30 जुलाई एक हिन्दी संगोष्ठी आयोजित की गई जिसका विषय था- “स्वाधीनता के 75 वर्षों में भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास”। इस माह राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (एनटीपीसी) के साथ स्थानीय मछुआरों को आजीविका में सुधार के लिए और हेमनगर सुंदरबन ड्रीम, सामाजिक विकास संगठन के साथ मछुआरों को आजीविका सुधार के लिए मत्स्य पालन संबंधी गतिविधियों पर प्रशिक्षण के लिए समझौता ज्ञापन किये गये।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

सिफ़री ने मोयना बील, पश्चिम बंगाल में राष्ट्रीय मछुआरा दिवस 2022 का आयोजन किया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री) ने दिनांक 10 जुलाई 2022 को मोयना बील, पश्चिम बंगाल में राष्ट्रीय मछुआरा दिवस 2022 का आयोजन किया। इस दिन सिफ़री ने जलीय कृषि क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता पहल को बढ़ावा देने के लिए गहन और औद्योगिक जलीय कृषि प्रणालियों के साथ 'उभरती जलीय कृषि प्रणालियों और अभ्यास' पर राष्ट्रीय अभियान भी मनाया।

मात्स्यिकी क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध नाम, डा. हीरालाल चौधुरी और डॉ. के एच अलीखुनी का है, जिनके कठिन प्रयास के कारण मछलियों का प्रेरित प्रजनन संभव हो पाया और जो देश के नीली क्रांति का एक अभिन्न आधार बना। इन दोनों वैज्ञानिकों ने 10 जुलाई 1957 को केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान स्टेशन, बैरकपुर ने ओडिशा के अंगुल फिश फार्म में इस तकनीक को सफलतापूर्वक स्थापित किया। इस अनोखे प्रयास के सम्मान में भारत सरकार ने वर्ष 1957 में 10 जूलाई को 'राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस' के तौर पर घोषित किया। तब से संस्थान हर वर्ष 10 जुलाई को 'राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस' के रूप में मनाता है। कृत्रिम पालन की दिशा में कार्प प्रजाति, सिरहिनस रेबा का प्रजनन सफल रहा । इस तकनीक का प्रयोग बाद में सिरहिनस मृगला, लेबियो रोहिता और पुंटियस सराना के प्रजनन के लिए किया गया। यह घटना भारतीय मत्स्य पालन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था जिसने जलीय कृषि में क्रांति ला दी और 1970 के दशक की शुरुआत में देश में नीली क्रांति का आह्वान किया गया। इस क्षेत्र ने 2021 में 17.4 मिलियन टन उत्पादन दर्ज किया गया है।

इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक, डॉ बि के दास ने सम्मानित अतिथियों के साथ प्रो. हीरालाल चौधरी को माल्यार्पण के साथ दीप प्रज्ज्वलन किया। डा. अपर्णा रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने उपस्थित सभी का स्वागत किया तथा इस महत्वपूर्ण दिवस के बारे में विस्तार से बताया।

डॉ. बि.के. दास ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मछली पालन से उत्पादन में सुधार और मछुआरों की आजीविका के लिए विभिन्न जलीय कृषि पद्धतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी की भागीदारी की आवश्यकता पर ध्यान देते हुए मोयना में एक जल गुणवत्ता परीक्षण केंद्र की स्थापना करने पर ज़ोर दिया जिसके लिए संस्थान द्वारा आवश्यक विशेषज्ञ मार्गदर्शन का भी आश्वासन दिया। इस कार्यक्रम में सिफ़री के प्रौद्योगिकी भागीदारों को भी किसानों द्वारा खेतों में उपयोग किए जाने वाले अनुसंधान प्रयोगशाला उत्पादों के प्रयोग में उनकी भूमिका के लिए सम्मानित किया गया।

मोयना रामकृष्णन एसोसिएशन के सचिव, श्री शशांक मैती ने मोयना मत्स्य पालन हब में मत्स्य पालन के विकास में सिफ़री के योगदान के लिए निदेशक और वैज्ञानिक दल को धन्यवाद दिया। साथ ही, मछली रोग और इनकी मृत्यु दर से निपटने के लिए मासिक तौर पर जल और मिट्टी की गुणवत्ता विश्लेषण के लिए अनुरोध किया। प्रो एस.के. दास, पश्चिम बंगाल प्राणी एवं मत्स्य विज्ञान ने किसानों को "जल कृषि में उभरते रुझान" तथा इसकी प्रभावशीलता के साथ लोकप्रिय प्रौद्योगिकियों के अनुकूलन पर आवश्यकता आधारित प्रौद्योगिकी के अनुकूलन के लाभ पर प्रकाश डाला। डॉ. बी के महापात्रा, सेवानिवृत्त पीआर वैज्ञानिक, सीआईएफई, कोलकाता ने सजावटी मत्स्य पालन पर जोर दिया और किसानों को इस तकनीक को अपनाने के विभिन्न लागत वाली प्रभावी तरीकों और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ बाजार मूल्य और मांग के बारे में बताया। डॉ. एस सामंता,

प्रभागाध्यक्ष, सिफ़री ने "स्थायी मत्स्य प्रबंधन के लिए मिट्टी और जल गुणवत्ता प्रबंधन का महत्व" पर प्रकाश डाला तथा किसानों के लाभ के लिए सरल तरीके से मत्स्य पालन पद्धतियों में विभिन्न जल और मिट्टी की गुणवत्ता मानकों के प्रभाव को समझाया।

इस अवसर पर मछली किसानों को वैज्ञानिक मात्स्यिकी प्रबंधन की दिशा में आगे बढ़ने में सुविधा प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी, पर्यावरण निगरानी, जलीय कृषि और स्वास्थ्य के विशेषज्ञों के साथ नैदानिक शिविर का आयोजन किया गया, जहां रोगग्रस्त मछलियों के नमूने एकत्र किए गए और नमूना जल के रासायनिक विश्लेषण के साथ किसानों को इस बारे में सूचित किया गया। साथ ही बड़ी संख्या में स्थानीय मछुआरों तक इसकी पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सामुदायिक रेडियो के माध्यम से कार्यक्रम आयोजित किए गए।

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस मनाने का प्राथमिक लक्ष्य उन प्रौद्योगिकियों के बारे में जन-जागरूकता बढ़ाना है जो मात्स्यिकी विकास के लिए लाभकारी हैं। ऐसे प्रयास से आर्थिक विकास, आजीविका उन्नयन और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन मुद्दों के समाधान के लिए वैज्ञानिकों, मछली किसानों और नीति निर्माताओं को एक साथ लाया जा सकता है। वर्ष 2019 में मत्स्य पालन में मोयना मछली फार्म की प्रभावकारिता के लिए राज्य सरकार ने इसे 'मत्स्य केंद्र' घोषित किया है। इसलिए यह आशा की जाती है कि इस तरह के कार्यक्रम बेहद प्रभावीशाली होंगे और मत्स्य पालन क्षेत्र को और भी बड़ी उपलब्धियों और ऊचाइयों तक ओर ले जाएंगे।

“स्वाधीनता के 75 वर्षों में भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास” हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), कोलकाता तथा भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता के समन्वित प्रयास से सिफरी मुख्यालय, बैरकपुर, कोलकाता में दिनांक 29-30 जुलाई एक हिन्दी संगोष्ठी आयोजित की गई जिसका विषय था- “स्वाधीनता के 75 वर्षों में भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास” । यह संगोष्ठी यह कार्यशाला आज़ादी का अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित किया जिसका उद्देश्य देश में विगत 75 वर्षों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास को दर्शाना तथा अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधान और विकास योजनाओं और प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डालना है। इस संगोष्ठी का उद्घाटन दिनांक 29 जुलाई को सिफरी मुख्यालय, बैरकपुर में हुआ जिसमें भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कोलकाता (कार्यालय-2), कोल इंडिया जैसे प्रतिष्ठित संगठनों के गणमान्य उच्चाधिकारीगण, वैज्ञानिक और शोध छात्रों ने भाग लिया।

उद्घाटन समारोह में, डॉ यू के सरकार, प्रभागाध्यक्ष, सिफरी, बैरकपुर ने अतिथियों

का स्वागत किया। डॉ. अशोक कुमार सक्सेना, पूर्व महाध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता, सम्मानित अतिथि ने अपने सम्बोधन में सिफरी के हिन्दी गतिविधियों और उपलब्धियों की सराहना की। श्री प्रियंकर पालीवाल, सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोलकाता (कार्यालय-2), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, कोलकाता ने विज्ञान और हिन्दी पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री कामाख्या नारायण सिंह, सहायक निदेशक (रा. भा), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली ने हिन्दी, विज्ञान और दर्शन शास्त्र के बीच के सामंजस्य पर एक प्रस्तुति दी। इसी क्रम में श्रद्धेय स्वामी विश्वमयानन्द जी महाराज, रामकृष्ण मिशन, सारगाछी, मुर्शिदाबाद ने विज्ञान एवं भारतीय दर्शन शास्त्र पर एक व्याख्यान दिया। सिफरी के प्रभागाध्यक्ष, डॉ. एम ए हसन ने संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस समारोह की मुख्य अतिथि, डॉ (श्रीमती) विजयलक्ष्मी सक्सेना, महाध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता ने अपने सम्बोधन में सिफरी के कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि उनका जुड़ाव इस संस्थान से लंबे समय से रहा है। संस्थान के निदेशक, डॉ. बसंत कुमार दास ने पारंपरिक कृषि पर एक व्याख्यान दिया। दिनांक 30 जुलाई 2022 को श्री राजेश कुमार साव, उप-प्रबंधक (राजभाषा), कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता ने आजादी 75 वर्षों में वैज्ञानिक क्षेत्र के विकास पर प्रकाश डाला।

इस संगोष्ठी में दो प्रतियोगितायें – निबंध तथा आशुभाषण आयोजित की गई जिनमें सिफरी, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था के साथ अनेक कार्यालयों ने भाग लिया और विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। समारोह के अंत में डॉ. अतुल कुमार, कार्यकारी सचिव, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता तथा डा. श्रीकांत सामंता, प्रधान वैज्ञानिक एवं सर्वकार्यभारी, हिन्दी कक्ष, सिफरी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। यह संगोष्ठी सिफरी के निदेशक, डॉ. बसंत कुमार दास के मार्गदर्शन में भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता से डॉ. अतुल कुमार, कार्यकारी सचिव तथा श्रीमती देबश्री दत्ता साहा, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी और सिफरी से डा. श्रीकांत सामंता, प्रधान वैज्ञानिक एवं सर्वकार्यभारी, हिन्दी कक्ष; सुश्री सुनीता प्रसाद, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) तथा श्रीमती सुमेधा दास, तकनीकी सहायक (हिन्दी) द्वारा सम्पन्न किया गया।

एसटीसी और एससीएसपी परियोजना के तहत झारखंड के मछुआरों को आजीविका सहायता प्रदान किया गया

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों से संबंधित मछुआरा सहकारी समितियों को मत्स्य पालन के लिए एफआरपी नौकाओं के वितरण के माध्यम से उनकी आजीविका में सुधार के प्रयास किए गए। 27-29 जून 2022 के दौरान झारखंड के तीन जिलों (रांची, हजारीबाग और खूंटी) में स्थित 10 जलाशयों के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के मछुआरों को संस्थान ने 10 एफआरपी नौका वितरित किए । इन 10 नावों में से, आउटबोर्ड मोटर वाली सात एफआरपी नावों को पेरखा, बोंडा, केरेदारी, घाघरा, जराहिया, कांके और हटिया जलाशयों के सहकारी समिति (अनुसूचित जाति) को वितरित की गईं। इसके अलावा, तीन नावों को गेतालसूद, करंजी और लोटवा जलाशयों की सहकारी समिति (अनुसूचित जनजाति) के बीच वितरित किया गया। प्रत्येक जलाशयों पर मोटरयुक्त एफआरपी नौकाओं का प्रदर्शन आयोजित किया गया। यह जलाशयों में मछली पकड़ने और मछली पालन गतिविधियों की निगरानी में सहकारी समिति की मदद करेगा। यह कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था, और डॉ ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक और राजू बैठा, वैज्ञानिक ने इस कार्यक्रम को सफल बनाया। इस कार्यक्रम में राज्य मत्स्य विभाग के जिला अधिकारी भी शामिल थे।

आईसीएआर-सिफरी द्वारा 'मेघालय राज्य में मत्स्य उत्पादन सांख्यिकी' पर विचार मंथन सत्र आयोजित

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने मत्स्य पालन निदेशालय (डीओएफ), शिलांग, मेघालय के मात्स्यिकी अधिकारियों के लिए 'मेघालय राज्य में मत्स्य उत्पादन सांख्यिकी' पर 5-6 जुलाई, 2022 में एक विचार मंथन सत्र का आयोजन किया। कार्यक्रम डीओएफ, मेघालय के अनुरोध के अनुसार आयोजित किया गया था। सत्र में राज्य के कुल 29 मत्स्य अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास के मार्गदर्शन में, डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, गुवाहाटी केंद्र के प्रमुख और सुश्री ए.एल. मावलोंग, एमसीएस, मात्स्यिकी निदेशक, मेघालय द्वारा किया गया। गुवाहाटी केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. ए. के. यादव, डॉ. एस. बोरा, ने विचार-मंथन सत्र में कर्यन्वक के रूप में कार्य किया।

श्री जे.एच. सुचियांग, मत्स्य पालन उप निदेशक, डीओएफ, मेघालय ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और विचार-मंथन सत्र के उद्देश्य के बारे में बताया। डॉ.ए.के. यादव ने भारत में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन से मौजूदा डेटा संग्रह और रिपोर्टिंग प्रणाली के अवलोकन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने नदियों, आर्द्रभूमि, झीलों और जलाशयों से मछली पकड़ने के आकलन के तरीकों के विषय में सरल दिशानिर्देशों पर भी चर्चा की। डॉ.एस. बोरा ने तालाबों और टैंकों के लिए मछली पकड़ने के आकलन के तरीके प्रस्तुत किए। उन्होंने अंतर्स्थलीय खुले जल प्रणालियों के लिए मत्स्य पालन बढ़ाने के विकल्प और अंतर्स्थलीय जलीय कृषि के लिए प्रौद्योगिकियों के बारे में भी बताया। पहाड़ी राज्य के जल निकायों से डेटा संग्रह में बाधाओं पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया और तदनुसार राज्य के जल निकायों से सटीक मछली उत्पादन अनुमानों पर पहुंचने के उपाय सुझाए गए।

डीओएफ, मेघालय की ओर से सुश्री ए.एल. मावलोंग, एमसीएस, निदेशक मात्स्यिकी, मेघालय ने संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास, को कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजन करने के लिये धन्यवाद दिया।

संस्थान, के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा चरण बील, असम में मनाया गया राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस, 2022 सह "उभरती जलकृषि प्रणालियों और प्रथाओं" पर राष्ट्रीय अभियान

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा चरण बील, बक्सा जिला, असम में 10 जुलाई, 2022 को "राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस, 2022" सह "उभरती जलीय कृषि प्रणालियों और प्रथाओं" पर राष्ट्रीय अभियान मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के समग्र मार्गदर्शन में किया गया; और गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख (कार्यवाहक), डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ राजेश कुमार, निदेशक, भाकृअनुप-अटारी, जोन-VI, गुवाहाटी ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. ए.के. यादव, डॉ. प्रणब दास, डॉ. एस.सी.एस. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक; डॉ. एस. बोरा, वैज्ञानिक और श्री ए. काकाती, एसटीए ने कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग दिया। कार्यक्रम में श्री नरेन बसुमतारी (अध्यक्ष) और श्री जादू स्वार्गियारी (सचिव) के नेतृत्व में धुलबाड़ी चरणपार जनजाति उन्नयन समिति, देउलकुची के तहत इलाके के 60 से अधिक आदिवासी मछुआरों / किसानों (15 महिलाओं सहित) ने भाग लिया।

डॉ. प्रणब दास ने कार्यक्रम में आए अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने दिन भर चलने वाले कार्यक्रम का उद्देश्य समझाया। उन्होंने पूर्वोत्तर क्षेत्र में खुले पानी की मात्स्यिकी के विकास के लिए संस्थान की भूमिका के बारे में भी जानकारी दी। श्री अमूल्य काकाती, एसटीए ने राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस के इतिहास और महत्व के बारे में बताया। डॉ. सिमंकू बोरा ने चरण बील में संस्थान के हस्तक्षेप के बारे में संक्षेप में बताया। श्री जादू स्वार्गियारी (सचिव) ने वैज्ञानिक और

तकनीकी मार्गदर्शन, मछुआरों को प्रशिक्षण और पूरक स्टॉकिंग के लिए इनपुट सामग्री (मछली के बीज, सिफरी केज ग्रो फ़ीड, सिफरी एचडीपीई पेन, आदि) प्रदान करने के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया। उन्होंने सभा को संस्थान के हस्तक्षेप के बाद चरण बील में मछली उत्पादन और मछुआरों की आय में वृद्धि के बारे में भी बताया। डॉ एस सी एस दास ने जलीय कृषि प्रौद्योगिकियों की प्रगति के बारे में संक्षेप में बताया। डॉ. राजेश कुमार ने आदिवासी मछली किसानों के लिए इस तरह के एक क्षेत्रीय कार्यक्रम के आयोजन के लिए संस्थान को बधाई दी। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि सिफरी के हस्तक्षेप के कारण मछली उत्पादन और स्थानीय मछुआरों की आय में वृद्धि हुई है। उन्होंने मछुआरों से समग्र विकास के लिए जलीय कृषि में एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, बक्सा जिले के माध्यम से भाकृअनुप-अटारी से और सहायता प्रदान करने का वादा किया। डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने स्थानीय मछुआरों से परियोजना अवधि के बाद भी मछली स्टॉक में वृद्धि और पेन कल्चर को अपने दम पर जारी रखने का आग्रह किया। उन्होंने स्थानीय बील समुदाय को तकनीकी सहायता प्रदान करने का वादा किया। उन्होंने उभरते जलीय कृषि प्रथाओं पर जोर देने के साथ असम के खुले जल मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्षेत्र के लिए उपलब्ध विभिन्न तकनीकों के बारे में भी जानकारी दी। कार्यक्रम का समापन डॉ. ए.के. यादव द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

परस्पर संवाद सत्र के दौरान, संस्थान के संसाधन व्यक्तियों ने पेन कल्चर, केज कल्चर, कल्चर-आधारित मत्स्य पालन, फ़ीड और फीडिंग प्रबंधन, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन और अर्थशास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर प्रतिभागियों के साथ बातचीत की।

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस के अवसर पर सिफरी द्वारा जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भाकृअनुप -केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा दिनांक 10 जुलाई 2022 को राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस के अवसर पर जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन यमुना नदी के तट पर ककराहा घाट पर किया गया 1 कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए संस्थान के केन्द्राध्यक्ष, डा० धर्म नाथ झा ने उपस्थित लोगों को नदियों और मछलियों के साथ साथ नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी। लोगो को नदियों की जैव विविधता और स्वच्छता के महत्व बारे में जागरूक किया और इसके संरक्षण के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजेश शर्मा, संयोजक नमामि गंगे (गंगा विचार मंच) NMCG ने भाग लिया। उन्होंने अपने सम्बोधन में गंगा-यमुना नदियों को स्वच्छ रखने में किये जाने वाले विभिन्न प्रयासों की जानकारी दी तथा गंगा-यमुना को निर्मल और अविरल बनाने के लिए लोगो से आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि, श्री चौधरी शैलेन्द्र नाथ सिंह, वरिष्ट समाजसेवी, सदियापुर, प्रयागराज ने सभा को संबोधित किया तथा मछुआरों के लिए मछली के महत्व को बताया। इस अवसर पर संस्थान के अन्य वैज्ञानिक डॉ वेंकटेश ठाकुर तथा श्री श्रवण कुमार शर्मा ने मत्स्य और मतिस्की के बारे में अद्यतन जानकारीयाँ साझा किया। सभा में उपस्थित मछुआरों ने भी अपनी बातों को रखा और सभी ने नदियों के प्रति जागरूक होने के साथ ही इसे स्वच्छ रखने का संकल्प व्यक्त किया।

समारोह में गंगा विचार मंच के प्रतिनिधि तथा आस-पास गाव के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी एवम यमुना तट पर रहने वाले स्थानीय लागों ने भाग लिया। कार्यक्रम में संस्थान के श्री राजेश जयसवाल, श्री नरेंद्र कुमार मौर्य, श्री जितेन्द्र कुमार और श्री राम सजीवन आदि ने भाग लिया।

उत्तर 24 परगना के बेलेडांगा और चामता बील में एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन पर हितधारकों की बैठक

पश्चिम बंगाल में मछुआरों के लिए आर्द्रभूमि मत्स्य पालन उनकी आजीविका और भोजन के प्रमुख स्रोतों में से एक है। भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान आर्द्रभूमि मात्स्यिकी के विकास में अनुकूल प्रौद्योगिकियों को अपनाकर लगातार मात्स्यिकी संवर्धन पर कार्य कर रहा है। इस क्रम में अनुसूचित जनजाति उपयोजना (एससीएसपी) कार्यक्रम के तहत, बील मछुआरो को पेन में मछली पालन तथा संबन्धित तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है। इस संदर्भ में उत्तर 24 परगना के बेलेडांगा और चामता बील में 9 जुलाई, 2022 को एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन के लिए पेन में मछली पालन प्रौद्योगिकी पर दो हितधारक बैठक-सह- जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 60 मत्स्य किसानों (प्रत्येक आर्द्रभूमि से 30 मछुआरे) ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने अपने सम्बोधन में सतत और स्थायी आर्द्रभूमि मत्स्य पालन और पेन में मछली पालन के महत्व पर जोर देते हुए आर्द्रभूमि से मछली उत्पादन बढ़ाने के उपायों का उल्लेख किया। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सामुदायिक

भागीदारी के बारे में बील मछुआरों का मार्गदर्शन कर, उन्हे वर्तमान वर्ष की अतिरिक्त आय से अगले वर्ष में निवेश की राशि स्वरुप संचित करने पर जोर दिया। मछुआरों की समस्याओं और चुनौतियों पर चर्चा की गयी। डॉ. दास ने आर्द्रभूमि से सतत मत्स्य पालन और पोषण सुरक्षा के लिए छोटी देशी मछलियों के संरक्षण पर भी जोर दिया। इस सभा में डॉ. अरुण पंडित, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. पी.के. परिदा, वैज्ञानिक ने उत्पादन और संरक्षण के तरीकों के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में बेलेडांगा और चामता आर्द्रभूमि के समिति सदस्यों में लगभग 7 टन सिफरी फ़ीड वितरित किया गया। मछुआरों ने सिफरी के सहयोग और हस्तक्षेप के लिए आभार व्यक्त किया। तकनीकी टीम ने दोनों आर्द्रभूमि के परिस्थितिकी के गुणवत्ता विश्लेषण के लिए पानी और तलछट के नमूने एकत्र किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अरुण पंडित, डॉ. पी.के. परिदा, सुश्री संगीता चक्रवर्ती, श्री कौशिक मंडल, श्री पूर्ण चंद्र द्वारा किया गया ।

असम के बक्सा जिले में बाढ़ के बाद पर्यावरण निगरानी शिविर आयोजित

इस साल अप्रैल-जुलाई के दौरान असम राज्य बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित रहा। राज्य के विभिन्न जलाशयों में बील मत्स्य पालन और मछली तालाबों सहित बाढ़ के पानी से न केवल मछली को बल्कि पर्यावरण को भी काफी नुकसान हुआ है। उत्पादन और उत्पादकता में पर्यावरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, जलीय कृषिविदों और मछुआरों के बीच पर्यावरणीय स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता पैदा करना बेहद जरूरी है। इस मुद्दे को हल करने के लिए, आईसीएआर-सिफरी के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र ने 10 जुलाई, 2022 को चरण बील, बक्सा जिले, असम में "राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस, 2022" के अवसर पर "बाढ़ के बाद पर्यावरण निगरानी शिविर" का आयोजन किया। कार्यक्रम संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था; और गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख (कार्यवाहक), डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, ने इसे सुचारु रुप से परिचालित किया। कार्यक्रम में धुलबाड़ी चरणपार जनजाति उन्नयन समिति, देउलकुची इलाके के 50 से अधिक आदिवासी मछुआरो ने भाग लिया। गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिक (डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, डॉ. ए.के. यादव, डॉ. प्रणब दास, डॉ. एस.सी.एस. दास और डॉ. एस. बोरा) और श्री ए. काकाती, एसटीए ने इलाके के जल निकायों की पर्यावरणीय स्थितियों की निगरानी और बील में मत्स्य पालन के दृष्टिकोण से पर्यावरण स्वास्थ्य प्रबंधन के महत्व के बारे में बताया।

परियोजना लॉन्च बैठक में "कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी" योजना के तहत एनटीपीसी के साथ समझौता ज्ञापन

16 जुलाई 2022 को भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (एनटीपीसी), फरक्का के बीच गंगा नदी में देशी मछली जर्मप्लाज्म के संरक्षण के लिए एक औपचारिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। एनटीपीसी की कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) योजना के तहत "स्थानीय मछुआरों को आजीविका में सुधार के लिए मछली प्रजनन पर अत्याधुनिक ज्ञान प्रदान करना और गंगा नदी में रेंचिंग कार्यक्रम के माध्यम से देशी मछली की आबादी को बढ़ाना" परियोजना को वित्त पोषित किया गया। इस संबंध में, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा एनटीपीसी, फरक्का, पश्चिम बंगाल में परियोजना लॉन्च बैठक का आयोजन किया गया था। परियोजना के नोडल वैज्ञानिक, डॉ. ए.के. साहू ने परियोजना की विस्तृत योजना और मछली जर्मप्लाज्म प्रसार के लिए भविष्य की आवश्यकता के साथ एक संक्षिप्त प्रस्तुति की। श्री संजीव कुमार, एनटीपीसी, फरक्का के परियोजना प्रमुख,ने आग्रह किया कि सभी देशी मछली जर्मप्लाज्म को ठीक से संरक्षित किया जाना चाहिए और आनुवंशिक संदूषण से बचने के लिए केवल गंगा से एकत्र किए गए ब्रूडर से हैचरी उत्पादित बीज / अंडे के माध्यम से प्रचारित किया जाना चाहिए। इसके अलावा, श्री कुमार ने गंगा नदी में छोड़ने से पहले स्पॉन विकास के लिए शेड और सीमेंट टैंक सहित हैचरी सेटअप के लिए जगह/भूमि उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। श्री एन.के शर्मा, महाप्रबंधक (संचालन), श्री ईशपॉल उप्पल,एनटीपीसी के महाप्रबंधक (ईएमजी/बीई) फरक्का, ने सीएसआर योजना के तहत गंगा नदी में मछली प्रजातियों के संरक्षण और प्रसार की दिशा में पहली बार ऐसे प्रयास पर प्रसन्नता व्यक्त की। एनटीपीसी से विभिन्न क्षमताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 13 अधिकारियों ने बैठक में भाग लिया बैठक का समापन डॉ. डी. के मीणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ए.के.साहू और डी.के.मीणा ने डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी के मार्गदर्शन में किया ।

मीन भवन में आयोजित की गई 'असम में खुले जल मत्स्य विकास' पर संवादात्मक बैठक

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और मत्स्य पालन निदेशालय (डीओएफ), असम ने संयुक्त रूप से 21.07.2022 को मीन भवन, गुवाहाटी में 'असम में खुले जल मत्स्य विकास' पर एक संवादात्मक बैठक का आयोजन किया। इसका उद्घाटन श्री राकेश कुमार, आईएएस, आयुक्त और सरकार के सचिव ने किया। उन्होंने दोनों संगठनों द्वारा सहयोगी गतिविधियों की सराहना की और उनसे संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन के लिए खुले जल मत्स्य पालन विकास के लिए मिलकर काम करना जारी रखने का आग्रह किया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास, के समग्र मार्गदर्शन में किया गया; श्री एन.के.देबनाथ, एसीएस, मत्स्य पालन निदेशक, असम और संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख (कार्यवाहक) डॉ.बी.के.भट्टाचार्य, भाकृअनुप-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के सभी वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मियों के साथ डीओएफ, फिशफेड, एएफडीसी लिमिटेड के अधिकारियों ने, और स्थानीय प्रिंट और मीडिया के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

डॉ. धुरबा ज्योति शर्मा, प्रबंध निदेशक, फिशफेड-सह-नोडल अधिकारी, एपार्ट, डीओएफ, असम ने पूरे कार्यक्रम का संचालन किया और इस के कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। श्री जे.पी मेधी, संयुक्त निदेशक मत्स्य पालन, असम ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और गणमान्य व्यक्तियों को सम्मानित किया। श्री राकेश कुमार, आईएएस, आयुक्त और सरकार के सचिव ने दोनों संगठनों से राज्य के मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के लिए मिलकर काम करने का आग्रह किया। श्री प्रशांत बोरकाकती, एसीएस, प्रबंध निदेशक, एएफडीसी लिमिटेड, गुवाहाटी ने कहा कि सिफ़री और एएफडीसी के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत बील मत्स्य पालन के विकास के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। सिफ़री के हाल के तकनीकी हस्तक्षेपों के कारण, बील के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि यह संस्थान के निदेशक के मार्गदर्शन और उनकी टीम की पहल के कारण संभव हुआ। डॉ. बि.के. दास ने देश के अन्तर्स्थलीय खुले पानी में मत्स्य पालन में हाल के विकास और असम और अन्य राज्यों में संस्थान की हालिया पहल के बारे में बताया। उन्होंने खुले पानी की मात्स्यिकी के लिए सिफ़री द्वारा विकसित व्यावसायिक उत्पादों (सिफ़री-केजग्रो फीड, सिफ़री-एचडीपीई पेन, सिफ़री जीआई-केज, आदि) के बारे में भी बताया। इस अवसर पर दो विषयों पर व्याख्यान भी प्रस्तुत किए गए। डॉ. आर. सी. बर्मन, मिशन निदेशक, एफएमएस-सीएमएसजीयूवाई (FMS-CMSGUY) ने "

असम मत्स्य पालन विभाग द्वारा खुले पानी में मत्स्य पालन विकास और भविष्य की पहल" पर एक प्रस्तुति दी। डॉ.बी.के.भट्टाचार्य ने 'असम की मात्स्यिकी परिदृश्य में खुले पानी के अनुसंधान एवं विकास में सिफ़री द्वारा की पहल' पर एक प्रस्तुति दी।

बातचीत के दौरान, डॉ. आर. सुरेश, रेजिडेंट कंसल्टेंट, वर्ल्डफिश ने सिफ़री और डीओएफ द्वारा उठाए गए कदमों की सराहना की। उन्होंने एपीएआरटी (APART) परियोजना के मात्स्यिकी घटक के तहत गतिविधियों के बारे में भी जानकारी दी। इसके संवादात्मक सत्र में सिफ़री के वैज्ञानिकों, डीओएफ के अधिकारियों और अन्य हितधारकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अपनी समापन टिप्पणी में, संस्थान के निदेशक महोदय ने दोनों संस्थानों से राज्य के खुले पानी में मत्स्य पालन का उपयोग करके राज्य के मछली उत्पादन को बढ़ाने के लिए हाथ मिलाने का आग्रह किया। श्री जे.पी. मेधी, संयुक्त निदेशक मात्स्यिकी, असम द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

हेमनगर सुंदरबन ड्रीम के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

भाकृअनुप-सिफ़री ने हेमनगर सुंदरबन ड्रीम, एक प्रमुख गैर सरकारी, समुदाय आधारित सामाजिक विकास संगठन (पंजीकरण संख्या एस/1 एल/89325) के साथ 26 जुलाई 2022 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। कृषि, बागवानी, पशुपालन और मछली पालन के क्षेत्र में शामिल पश्चिम बंगाल और सिक्किम में किसानों और बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

सिफ़री जुलाई 2022 से 2025 तक पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिला क्षेत्रों में हेमनगर सुंदरबन ड्रीम के सहयोग से टीएसपी/एसटीसी, एससीएसपी, प्रदर्शनी, आजीविका, प्रशिक्षण और विस्तार गतिविधियों, जागरूकता अभियान, वैज्ञानिक -किसान विचार-विमर्श, स्वच्छ भारत अभियान, मेरा गांव मेरा गौरव आदि जैसे परियोजना उद्देश्यों को लागू करेगा।

सिफ़री, हेमनगर सुंदरबन ड्रीम के सहयोग से पश्चिम बंगाल में मत्स्य पालन संबंधी गतिविधियों पर प्रशिक्षण, एक्सपोजर ट्रैनिंग के साथ ही प्रगतिशील किसानों की क्षमता निर्माण में मदद करेगा।

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, ने मणिपुर के विस्थापित आदिवासी लोगों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

मणिपुर भारत के सबसे पूर्वी कोने में स्थित राज्य है जिस की लगभग 41% आबादी अनुसूचित जनजाति से है। मैतेई, नागा और कुकी मणिपुर का मुख्य जनजातीय समूह है। कृषि राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में 50-60% का योगदान करती है। मणिपुर में जल निकाय जैसे झीलों, आर्द्रछेत्रों, तालाबों, जल-जमाव वाले क्षेत्रों, नदियों/धाराओं और जलाशयों की काफी संख्या है, हालांकि अभी तक कुल संभावित जल क्षेत्रों का केवल 32.94% मत्स्य विकास संभव हुआ है। मणिपुर की 95% से अधिक आबादी मछली का सेवन करती है। राज्य में उत्पादन क्षमता होने के बावजूद भारत के अन्य राज्यों से मछली आयात करनी पड़ती है। कामजोंग जिले में मैपिथेल जलाशय के निर्माण से 1600 से अधिक आदिवासी घरों का विस्थापन हुआ और आदिवासी आबादी की कृषि भूमि जलमग्न हो गई। आदिवासी आबादी का प्राथमिक व्यवसाय कृषि था, भूमि के जलमग्न होने के कारण वे दूसरे व्यवसाय में जाने के लिए मजबूर हो गए।

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने वैकल्पिक आजीविका उत्पादन यानी मत्स्य पालन के माध्यम से आदिवासी आबादी की आजीविका का समर्थन करने के लिए मणिपुर के चयनित जलाशयों में जलाशय मत्स्य विकास कार्यक्रम शुरू किया है। मणिपुर के कामजोंग जिला में स्थित मैपिथेल जलाशय छह गांवों से घिरा हुआ है इन गावों के तनखुल (नागा) जनजाति के ग्रामीण अब मत्स्य पालन

के माध्यम से अपनी आजीविका कमाने के लिए इस जलाशय पर निर्भर हैं। संस्थान जलाशय में मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए, स्वस्थ्य रूप से मत्स्य अंगुलिकाओं को पालने के लिए पेन कल्चर प्रदर्शन कार्यक्रम शुरू किया। संस्थान ने अनुसूचित जनजाति घटक के तहत अपनी आजीविका का समर्थन करने के लिए मैपिथेल जलाशय के आदिवासी मछुआरों को दो 0.1 हेक्टेयर पेन, 2 टन CI-FRI केज ग्रो फीड दिया है।

22-28 जुलाई 2022 के दौरान जलाशय के चयनित मछुआरों के लिए संस्थान, मुख्यालय में 'उत्पादन वृद्धि के लिए जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन' पर एक ऑन-कैंपस क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया है और कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में डॉ. दास ने क्षेत्र में जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए पेन और केज कल्चर के महत्व पर जोर दिया। क्षमता निर्माण कार्यक्रम में मिट्टी और जल रसायन विज्ञान, मछली पालन की मूल बातें, पेन कल्चर, केज कल्चर फिश फीडिंग, मछली स्वास्थ्य और रोग प्रबंधन आदि पर सत्र शामिल थे, जिसमें मछली फ़ीड निर्माण पर प्रशिक्षण और बुनियादी जल गुणवत्ता मापदंडों का विश्लेषण शामिल था। कार्यक्रम के अंत में प्रशिक्षुओं से फीडबैक सत्र का आयोजन भी किया गया’। यह कार्यक्रम खालसी आर्द्रभूमि, और मैथन जलाशय के क्षेत्र में एक्सपोजर दौरे के माध्यम से खुले पानी में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों के व्यावहारिक कौशल को मजबूत करने के लिए उन्मुख किया गया है। कक्षा सत्र के अलावा फील्ड प्रदर्शन भी आयोजित किए गए। फीडबैक सत्र में लगभग 97% प्रशिक्षुओं ने प्रशिक्षण कार्यक्रम से उच्च स्तर की संतुष्टि व्यक्त की। समापन सत्र में प्रशिक्षुओं को गिल नेट भी वितरित किये गये। कार्यक्रम का आयोजन डॉ अपर्णा रॉय (वरिष्ठ वैज्ञानिक), सुश्री थंगजाम निरुपदा चानू (वैज्ञानिक), और श्री मितेश एच रामटेके (वैज्ञानिक) द्वारा, डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर के कुशल मार्गदर्शन में किया गया ।

भारतीय स्टेट बैंक ग्राहक पहुंच एवं संपर्क शिविर का आयोजन

कृषि ऋण का एक बड़ा हिस्सा भारतीय स्टेट बैंक के पास संरक्षित होता है। भारतीय स्टेट बैंक अपने विभिन्न शाखा कार्यालय जैसे

भंगानखली, बासंती, कैनिंग आदि अन्य शाखाओं के माध्यम से बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करता हैं। अपने इस ग्राहक पहुंच (आउटरीच) का विस्तार करने के लिए यह बैंक कृषि क्षेत्र में भी ऋण देने का विचार कर रहा है।

सिफरी अपने अनुसूचित जनजाति परियोजना के तहत कुलताली मिलन तीर्थ सोसाइटी, सुंदरबन के सहयोग से साधनहीन और विशेषकर प्राकृतिक आपदा पीड़ित मछुआरों को मात्स्यिकी विकास तथा आजीविका उन्नयन के लिए सुविधाएँ प्रदान करता रहा है। इस क्रम में भारतीय स्टेट बैंक ने अपने आउटरीच बढ़ाने और कृषि क्षेत्र से जुड़े अपने ग्राहकों के लिए कुलतोली मिलन तीर्थ सोसाइटी (ग्राम-कुलतोली, सूदरबन) के सहयोग से दिनांक 22 जुलाई 2022 को कुलतोली, सुंदरवन में एक ग्राहक पहुंच एवं संपर्क शिविर का आयोजन किया जिसके मुख्य अतिथि संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास थे। इस अवसर पर भारतीय स्टेट बैंक ने देश के मात्स्यिकी क्षेत्र में डा. बि. के. दास, निदेशक, सिफ़री के योगदान को देखते हुये उन्हें पुरस्कार से सम्मानित किया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- हिमाचल प्रदेश के गोबिंदसागर जलाशय का अध्ययन मछली उत्पादन और औसत वार्षिक जल प्रसार क्षेत्र ने सकारात्मक संबंध दर्ज किया गया जो यह दर्शाता है कि जलाशय में स्थायी मत्स्य पालन और उत्पादन वृद्धि के लिए पर्याप्त जल विस्तार क्षेत्र की आवश्यकता है।
- पश्चिम बंगाल के रायगंज, उत्तर दिनाजपुर में एक राष्ट्रीय संरक्षित क्षेत्र, कुलिक पक्षी अभयारण्य में अध्ययन में यह देखा गया कि 55 मछली प्रजातियों में छोटी देशी मछलियों की प्रचुरता है। ऐसा आंकड़ा प्रथम बार दर्ज किया गया है।
- पश्चिम बंगाल (खलसी और भोमरा) में दो बाढ़कृत मैदानी झीलों में गर्मी के महीनों मीथेन गैस का उत्सर्जन दर बहुत अधिक (7117-9534 ग्रा प्रति हे. प्रति दिन) पाया गया, जबकि ऊपरी क्षेत्र में उत्सर्जन दर लगभग नगण्य था। सर्दी के महीनों में यह उत्सर्जन दर बहुत कम देखा गया।
- लोकतक झील, मणिपुर में *चन्ना स्ट्रेटा* (स्थानीय नाम : पोरोंग) के किशोर मछलियों को क्षति पहुंचाने वाली एक विनाशकारी मत्स्यन पद्धति देखी गई, जो झील पारिस्थितिकी, फूड वेब और ट्रॉफिक संरचना के लिए अत्यधिक हानिकारक है।
- जून 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमान मछली लैंडिंग 8.535 टन था, जो जून 2021 में कुल मछली पकड़ में 46 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।
- ईस्ट कोलकाता वेटलैंड से संचयित मछली के नमूनों जैसे *ई. कोलाई*, एरोमोनास एसपीपी के 25 एकत्रित आइसोलेट्स और *स्टैफिलोकोकस औरस*, दो फेनोटाइपिक कोलिस्टिन प्रतिरोध आइसोलेट्स की पहचान की गई है। ई. कोलाई को एम्पीसिलीन और एमोक्सिसिलिन/क्लैवुलनेट सहित कई एंटीबायोटिक दवाओं के लिए बहुऔषध प्रतिरोध के तौर पर उपयोग किया जा सकता है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 22 जून, 2022 को आभासी मोड में अरिस्टोजेन बायोसाइंसेज प्राइवेट लिमिटेड, बैंगलोर के साथ "मछलियों में एरोमोनस के नियंत्रण के लिए बैक्टीरियोफेज आधारित

फॉर्मूलेशन का विकास" पर बीआईपीपी परियोजना के लिए एक बातचीत बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 28 जून 2022 को भुवनेश्वर, ओडिशा वर्ल्डफिश के साथ बैठक में भाग लिया। इस बैठक में उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद भी उपस्थित थे।
- संस्थान ने 28 जून 2022 को सचिव (मत्स्य पालन), भारत सरकार की अध्यक्षता में आयोजित मत्स्य विकास पर एक बैठक में भाग लिया।
- निदेशक, भाकृअनुप-सीआईएफआरआई ने 6 जुलाई, 2022 को नाबार्ड, कोलकाता के क्षेत्रीय सलाहकार समूह की बैठक में भाग लिया
- संस्थान के निदेशक तथा अन्य वैज्ञानिकों से साथ डिडिएर राबोइसन, अटैच डे कोऑपरेशन साइंटिफिक एंड यूनिवर्सिटी नॉर्थ ईस्ट ज़ोन, मिस्टर बैप्टिस्ट फोंडिन, चार्ज डे मिशन, डॉ मीनाक्षी सिंह और श्री अमिताभ दास, फ्रांस दूतावास, नई दिल्ली, भारत के साथ 11 जुलाई 2022 को बैठक हुई जिसमें दोनों संगठनों के बीच संभावित पारस्परिक सहयोग के बारे में चर्चा की गई ।

कार्यक्रम

- संस्थान ने दिनांक 10 जुलाई 2022 को 'राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस' को मोयना फिशरीज हब, पूर्वी मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल में उभरती हुई जलीय पलायन पद्धति पर एक राष्ट्रीय अभियान के तौर पर मनाया गया। इस कार्यक्रम में 150 महिला मछुआरों सहित 498 मछुआरों ने भाग लिया। इस अवसर पर मछुआरों के लिए निदान शिविर का भी आयोजन किया गया।
- संस्थान ने दिनांक 12 जुलाई 2022 को पुरी जिले के अस्टारंगा में देवी नदी के मुहाने पर 'ओडिशा के तटीय आर्द्रभूमि पर जलवायु परिवर्तन प्रभाव' पर एक संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 150 तटीय मछुआरों और राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया।
- भाकृअनुप-सीआईएफटी के सहयोग से स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए मछली पर राष्ट्रीय अभियान 16 जुलाई, 2022 को भाकृअनुप-सिफरी में भौतिक और आभासी दोनों माध्यम से आयोजित किया गया। इसमें 119 प्रतिभागियों ने ऑफलाइन और ऑनलाइन मोड दोनों ही माध्यम से सक्रिय तौर पर भाग लिया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का 94वां स्थापना दिवस 16 जुलाई 2022 को मनाया गया। इसमें 200 अधिकारी और कर्मचारी सदस्य वर्चुअल मोड के माध्यम से मुख्य कार्यक्रम में शामिल हुए।
- प्रगत संगणन विकास केंद्र (सीडैक), कोलकाता और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) हैदराबाद के साथ संयुक्त रूप से दिनांक 20 जुलाई, 2022 को गुवाहाटी में MEAN परियोजना के तहत "जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए जैव-संवेदक" पर एक बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक में 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- गुवाहाटी, असम में दिनांक 21 जुलाई 2022 को मत्स्य पालन विभाग, असम सरकार के सहयोग से भाकृअनुप-सीआईएफआरआई द्वारा "असम में खुलाजल मात्स्यिकी विकास" पर संवादात्मक बैठक आयोजित की गई थी। इस कार्यक्रम में 75 प्रतिभागियों ने भाग

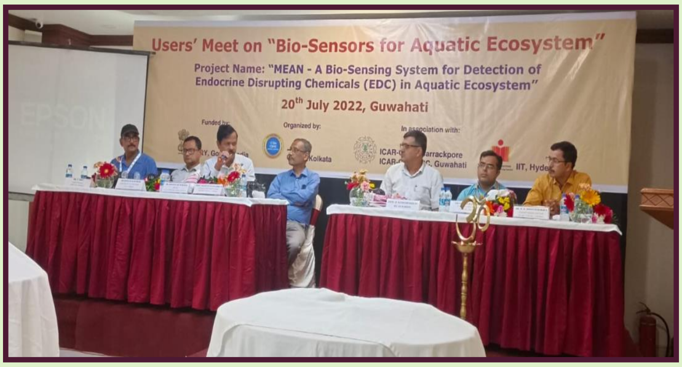

लिया।

- अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन पर हितधारकों की बैठक दिनांक 9 जुलाई, 2022 को पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिलों के बेलेडांगा और चमता बील में आयोजित की

गई थी, जिसमें 60 किसानों (प्रत्येक आर्द्रभूमि में 30 मछुआरों) ने सक्रिय भाग लिया था।

- सतत विकास के लिए जलाशयों में पालन आधारित मात्स्यिकी पर जागरूकता कार्यक्रम दिनांक 10 जुलाई 2022 को वनविलास सागर जलाशय, चित्रदुर्ग, कर्नाटक में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में 80 मछुआरों (28 महिलाओं और 52 पुरुषों) ने भाग लिया।

- सिफरी के कोच्चि अनुसंधान स्टेशन ने दिनांक 10 जुलाई 2022 को चुलियार मछली बीज फार्म, पलक्कड़, केरल में 'उभरती जलीय कृषि प्रणालियों और पद्धति' पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। चुलियार और मीनकारा मत्स्य सहकारी समितियों के सदस्य, केरल राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारियों और मछुआरों सहित 60 लोगों ने भाग लिया।

- संस्थान ने दिनांक 09 जुलाई, 2021 को बालागढ़, हुगली में एक्स-सीटू संरक्षण के माध्यम से गंगा नदी के स्वदेशी बहुमूल्य इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों (लेबिओ रोहिता, लेबियो कतला, सिरहिनस मृगला) के पुनरुद्धार के लिए प्रेरित प्रजनन कार्यक्रम के माध्यम से लगभग 75 लाख स्पॉन का उत्पादन किया था। प्रजनन गतिविधि के दौरान निषेचन दर 96 प्रतिशत और हैचिंग दर 94 प्रतिशत दर्ज किया गया था।

- सिफरी, प्रयागराज ने दिनांक 10 जुलाई 2022 को यमुना नदी के तट पर काकरा घाट, प्रयागराज में एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें गंगा विचार मंच के अधिकारी, आस-पास के गांवों के मछुआरों, मछली व्यापारियों सहित 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- संस्थान ने जुलाई, 2022 में गंगा के ऊपरी क्षेत्र (निमसहर और तलटोला घाट) और फरक्का (जाफरगंज, होसेनपुर, नटुनबस्ती, मालाघाट,) के साथ-साथ कुलिडियार, मालदा के निचली क्षेत्र में हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण के संबंध में 8 जागरूकता कार्यक्रमों को आयोजित किया था। इन कार्यक्रमों में 108 मछुआरों ने भाग लिया।

- फरक्का के ऊपरी क्षेत्र में 154 हिल्सा की रैंचिंग की गई, जिसमें 2 मछलियों को टैग किया गया था । रैंचिंग के दौरान हिल्सा का रिकॉर्ड वजन 201 ग्राम (अधिकतम) से 32 ग्राम (मिनट) तक देखा गया।

- सिफरी ने 30 जून 2022 को तकनीकी और वाणिज्यिक व्यवहार्यता, हैंडहोल्डिंग आवश्यकता, व्यावसायीकरण के पसंदीदा तरीकों का आकलन करने और तीन सिफरी प्रौद्योगिकियों के लिए मानक शर्तों को विकसित करने के लिए एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड नई दिल्ली द्वारा आयोजित तकनीकी वाणिज्यिक मूल्यांकन और विशेषज्ञ समिति की बैठक में भाग लिया। इन तीनों प्रौद्योगिकियों को एग्रीनोवेट इंडिया के माध्यम से व्यावसायीकरण और लाइसेंसिंग के लिए अनुमोदित किया गया है।

सेवानिवृत्ति

संस्थान मुख्यालय में कार्यरत श्री शुबेंदु माडल तकीनीकी अधिकारी ने दिनांक 31 जुलाई 2022 को अपने कार्यकाल को पूर्ण करते हुये सेवानिवृत हुए। इस अवसर पर सिफरी मनोरंजन क्लब के तरफ से श्री मण्डल ने सम्मान में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। सहकर्मियों ने श्री मण्डल को स्वस्थ एवं सुखी अवकाश जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं दी ।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

ICAR-CIFRI Moyna Fish-Hub initiative

ICAR-CIFRI ventured to the doorsteps of the fishers of Moyna Fish-Hub, fostering the 22nd National Fish Farmers Day 2022, commemorating the first success of 'Induced Breeding' by Prof Hiralal Chaudhury, 'the Father of Induced Breeding' paving the way for the first Blue Revolution in India on July 10. The primary goal was to increase awareness of technologies that are beneficial to the fisheries sector and bring together scientists, fish farmers, and policymakers to address the inland fisheries issues. The fishers were told how to solve their problems of ecosystem management, fish disease and related issues in fish and fish seed transports, including timely marketing. More than 500 fishers benefited through interactions with domain specialist scientists. They received first-hand knowledge from pamphlets/leaflets besides resolving issues on water quality parameters of their water resources and disease diagnostics being analysed on-site. Dr B K Das, director, CIFRI assured the fisher community of Moyna CIFRI's presence during any crisis.

વડોદરામાં મત્સ્ય ખેડૂત દિવસની થઈ ઉજવણી

ને જતીન કહે છે કે જલજીવ ઉછેર(મત્સ્ય પાલન)એ પર્યાવરણને નુકશાનકારક ન વ્યવસાય છે એટલે અમે આ પર્યાવરણ મિત્ર વ્યવસાયમાં ઝંપલાવવા માંગીએ છે

दबंग दुनिया

सिफरी द्वारा सुंदरबन के मछुआरों का सतत विकास, ग्रामीण महिलाओं को दिया प्रशिक्ष

মাছেদের প্রত্যাবর্তন

Drones to check water bodies and fish health

SUBHASISH CHAUDHURI

Barrackpore: The central government has developed an indigenous technology for aerial monitoring of inland water bodies and underwater inspection for fish health management in real time with aerial and underwater drones.

Powerful aerial drones conceived and technologically integrated by the Barrackpore-based Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI), a wing of the Indian Council of Agricultural Research (ICAR), can access water bodies in inaccessible areas, spray medicine and fly with water samples..

Underwater drones developed by the CIFRI can dive 100 metres into the water to scan fish behaviour and take out dead fish with robotic hands.

An aerial drone over the Hooghly river in Barrackpore as a part of a demonstration by the CIFRI. Picture by Pranab Biswas

Scientists and researchers feel that the project can benefit the riverine delta of the Sunderbans spanning parts of North and South 24-Parganas districts where a large number of fisheries are located.

The endeavour conceived and developed by the CIFRI, under its Precision Fish Farming Inland Open Water Project, had been placed for discussion to examine its feasibility at a pan-Indian conference "Indian Fisheries Outlook 2022" in Barrackpore in March.

The initiative was widely accepted in presence of scientists and fishery entrepreneurs apart from the representatives of various state governments including Bengal.

"Our aim is to ensure sustainable development of fisheries using technology that can double the earnings of the farmers with minimum investment," CIFRI-Barrackpore Director Basanta Kumar Das told **The Telegraph.**

"Under the Precision Fish Farming project we have adopted a highly precise set of practices to cater to individual (fish) farms."

Scientists working in inland water bodies — canals, rivers and ponds — usually need a long time for inspection, collection of water samples and other tasks through boats. These jobs can be done by aerial drones in minutes, Das added.

"A drone can access difficult areas where boats can be risky. It can take pictures and collect water for analysis using its inbuilt sensors and can be very effective for aqua vegetation mapping," he said. "It can fly up to 30 minutes continuously with items that weigh up to 11kg."

The underwater drone fitted with a powerful camera and light can be used to study fish behaviour and health.

"This includes identifying diseases or erratic behaviour of fish, taking out dead fish or any unwanted item from water," Das said, adding that they had attached robotic hands to underwater drones.

Sunderbans affairs minister Bankim Hazra, who recently visited the CIFRI campus in Barrackpore, said: "The concept introduced by the CIFRI has great potential for farmers in Sunderbans.....We

अमृत कलश टाइम्स

प्रयागराज सोमवार 11 जुलाई 2022

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस पर सिफरी द्वारा जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

नदियों की जैव विविधता व स्वच्छता पर दी जानकारी

प्रयागराज। राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस के अवसर पर रविवार को केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) प्रयागराज द्वारा यमुना तट पर स्थित ककरहा घाट पर जन जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। सिफरी के केंद्राध्यक्ष डॉ. धर्मनाथ झा

वाले विभिन्न प्रयासों के बारे में

वडोदरा में मनाया राष्ट्रीय मछुआरा दिवस समारोह

वडोदरा @ पत्रिका. राष्ट्रीय मछुआरा दिवस के अवसर पर वडोदरा में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के केंद्रीय अंतदरेशीय मत्स्य अनुसंधान केंद्र (सीएफआईआरसी) की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया। वडोदरा के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर मछुआरे राहुल पवार व स्कूल शिक्षा प्राप्त मछुआरे जतिन वसावा के अनुसार मछली पकड़ना पर्यावरण के अनुकूल व्यवसाय है और इसमें प्रकृति के निकट रहने की सुविधा है।

19 साल से मत्स्य पालन कर रहे खेड़ा जिले के नडियाद निवासी मछुआरे प्रशांत जायसवाल के अनुसार उनके पास मत्स्य पालन के लिए 17 तालाब हैं। इस व्यवसाय में उत्पादकता वृद्धि के अच्छे अवसर हैं, जिनसे रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकते हैं। कार्यक्रम में केंद्र के प्रभारी डॉ. सुहास प्रकाश काम्बले, वैज्ञानिक डॉ. रोहित कुमार, मत्स्य पालन विभाग के वडोदरा कार्यालय के सहायक अधीक्षक राजकमल, मछुआरे, मत्स्योद्योग से जुड़े व्यवासायी भी मौजूद थे।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है